दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): DEPIL DEO

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनाक (Test No. & Date): 16/10/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	7	4	0	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

उत्तर काफी अच्छे हैं। पूरा प्रश्नपत्र हल करने का प्रयास किया करें।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 117½

टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, विरहा है सुलितान।
जिस घटि विरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश संतकाव्यधारा के हस्ताक्षर कबीरदास की वाणी के संकलनकर्ता डा॰ श्यामसुंदर दास के संकलन 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह को अंग' से लिया गया है।

प्रसंग व व्याख्या : इस दोहे में कबीर दास ब्रह्म से एकत्व की छटपटाहट को विरह के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं। यहाँ विरह को त्याज्य व निंदनीय व पीड़ादायक न मानते हुये इसे काम्य माना गया है। विरह को सुल्तान एवं सम्राट के समान सभी भावों के ऊपर माना गया है। वे कहते हैं कि जिस हृदय में विरह का भाव नहीं है वह सभी भावों के होने के बावजूद श्मशान घाट की समानता लिए हुए उदासीन है।

भावगत सौंदर्य : 1. कबीर निर्गुण ब्रह्म के उपासक हैं अज्ञानता एवं विरह का कारण है।

2. इन पंक्तियों में शंकर के अद्वैतवाद तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस्लामी एकेश्वरवाद का प्रभाव है।

3. कबीर के समान जायसी भी विरह को काम्य मानते हैं।

काव्यगत सौंदर्य:

1. कबीर की भाषा पंचमेल सधुक्कड़ी है। सुलतान (फारसी), संचरै (तद्भव)

2. उपमेय उपमान विधान विरह (सुलतान) से अर्थ की गंभीरता बढ़ गयी है।

3. मसान के ~~प्रतीक~~ के माध्यम से विरही हृदय को उदासीन माना गया है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग।।

संदर्भ: उपरोक्त काव्यांश रीतिकालीन कवि 'बिहारी' की रचना 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में कवि [illegible] चाहे वह संगीत हो [illegible] राग-रागिनियाँ हो या [illegible] रस की उपलब्धि चाहते हैं। जो इसे ऊपरी उपादानों से पाना चाहता है वह उपलब्ध नहीं कर पाता और जो इसमें अपना भाव निरोहित करता है वही रस की उपलब्धि कर पाता है।

भावगत सौंदर्य:

1. बिहारी शास्त्र को कला का मानक मानते हैं। भारतीय परम्परा के 'रस शास्त्र' का प्रभाव है।
2. आचार्य शुक्ल ने 'रस' को लोकमंगल से जोड़ बिहारी के दृष्टिकोण को और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर लेजाकर मँगलवाए 'ले जो' दिया।

काव्यगत सौंदर्य:

1. दोहा छंद है। बिहारी भावों की समाहार एवं भाषा की समास समता द्वारा एक दोहे में अर्थ की विविधता भर देते है।

2. ब्रज भाषा की कलात्मक क्षमता का परिचय इस दोहे में मिलता है।

3. विरोधाभासों के द्वारा अर्थ की गंभीरता को बढ़ाया गया है। 'अनबूड़े बूड़े तिरे'

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ : दिया गया काव्यांश सूफी प्रेमाख्यान के अमिट हस्ताक्षर 'मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या : इन पंक्तियों में जायसी 'रतनसेन के सिंहल द्वीप चले जाने से नागमती के वियोग का वर्णन कर रहे है। भादों मास की काली अँधियारी रात में नागमती भयंकर की वर्षा एवं बिजली की चमक के बीच विरह के ताप का अनुभव कर रही है विरह का ताप ऐसा है कि वर्षा की बूंदे उसे शमित नही कर पा रही है। एक तरफ भादों बरस रहा है दूसरी तरफ नागमती के नैनो से अश्रुधारा बह रही है। पूर्वा नक्षत्र भी नागमती के लिए आक के ही समान है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ: दिया गया काव्यांश सूफी प्रेमाख्यान के अमिट हस्ताक्षर 'मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में जायसी 'रतनसेन के सिंहल द्वीप चले जाने से नागमती के वियोग का वर्णन कर रहे है। भादों मास की काली अँधियारी रात में नागमती भयंकर की वर्षा एवं बिजली की चमक के बीच विरह के ताप का अनुभव कर रही है विरह का ताप ऐसा है कि वर्षा की बूंदे उसे शमित नहीं कर पा रही है। एक तरफ भादों बरस रहा है दूसरी तरफ नागमती के नैनो से अश्रुधारा बह रही है पूर्वा नक्षत्र भी नागमती के लिए सूखे के ही समान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौंदर्य :

1. नागमती के विरह में प्रकृति विरह के दर्द को और बढ़ा रही है।
2. भावों का साधारणीकरण नागमती के विरह को हिन्दी साहित्य में अद्वितीय बना दिया है।
3. आचार्य शुक्ल ने 'हिन्दू नारी की व्यथा-कथा' कहकर इस विरह वर्णन की प्रशंसा की है।
4. कामशास्त्र का प्रभाव (विरह-नाग) दिखाई पड़ता है।

काव्यगत सौंदर्य :

1. अवधी की ठेठ भाषा एवं खालिस मिठास परिलक्षित होती है।
2. 'हिय फाटी' मुहावरे का प्रयोग किया गया है।
3. प्रकृति का प्रयोग उद्दीपन विभाव के रूप में किया गया है।
4. बारहमासा काव्यरूढ़ि का प्रयोग किया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।

तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।

बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।

पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।

ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।

सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

संदर्भ : उपरोक्त पद कृष्ण काव्यधारा के कवि सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' के 'भ्रमर गीत प्रसंग' से लिया गया है। इसके संकलनकर्ता आचार्य रामचंद्र शुक्ल है।

प्रसंग+व्याख्या : इन पंक्तियों में सूरदास गोपियों विरह का वर्णन कर रहे है। वे कहते है उनके प्रिय कृष्ण के मथुरा गमन के कारण ब्रज की यह प्रकृति जो मिलन के उल्लासपूर्ण क्षणों में अत्यंत मनोहरी लग रही थी वह विरह में अत्यंत उजाड़ एवं विरह को और भी बढ़ाने वाली हो गयी है। वन, लता, पशु पक्षी, कुसुम इत्यादि सभी मिलकर गोपियों को विरह के ताप से भस्म करती हुयी प्रतीत होती है।

वे उद्धव से कहती है कि उनका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदेश कृष्ण तक पहुँचा दें।

भावगत सौंदर्य :

1. निर्गुण-सगुण द्वन्द्व में सूरदास सगुण ब्रह्म की उपासना के समर्थक हैं अपितु का यह रसात्मक रूप लोक के लिए अत्यंत उपयोगी है।

2. जायसी की नागमती भी इसी प्रकार के विरह का दंश झेलती है।

3. प्रकृति पर उद्दीपन विभाव का प्रयोग किया गया है।

काव्यगत सौंदर्य :

1. ब्रज की चरम कलात्मकता के दर्शन हो रहे हैं।

2. पदों में गेयता के साथ संगीतात्मकता भी है।

3. उपमेय उपमान विधान अर्थ की गंभीरता बढ़ा रहा है। (मोर दोऊ नैन..."

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ रामकाव्यधारा के प्रणेता कवि तुलसीदास की रचना कवितावली से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों मे तुलसी दास अपने जीवन के अंतिम क्षणों में अपने आराध्य राम से विनयपूर्वक निवेदन कर रहे है। वे कहते है कि उनकी न तो कोई जाति है न ही वे अन्य किसी की जाति से तात्पर्य रखते है। वे तो सिर्फ अपने रघुनाथ के माध्यम से ही पहचाने जाते है। वे किसी के द्वार पर नहीं जाते और जाते हैं तो सिर्फ और सिर्फ अपने आराध्य राम को।

प्रकारान्तर से तुलसी सभी के एकत्व की बात करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौंदर्य :

1. तुलसी सगुण ब्रह्म की उपासना के साथ उसके समस्त सभी व्यक्तियों के मध्य समानता की बात करते है।
2. पं० रामविलास शर्मा ने तुलसी की इसी चेतना के कारण उन्हे 'सामंत विरोधी मूल्यों' से मुक्त मानते है।
3. वर्णभेद एवं जाति भेद को समाप्त कर तुलसी सामाजिक समरसता की स्थापना चाहते है।
4. कबीर एवं संत परम्परा मे भी जाति व्यवस्था का विरोध है। 'जाति हमारी ब्रह्म है'
5. आत्मनिवेदन और विनय का भाव है।
6. ब्रज भाषा का प्रयोग है।
7. उपमेय - उपमान विधान द्रष्टव्य है ("साह ही को .....")

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' पर अस्तित्ववाद तथा जेन बौद्धमत का प्रभाव कहाँ तक दिखाई देता है? विवेचन कीजिये। 20

अज्ञेय को आलोचकों ने दर्शन में अनुभूति में घुलाने वाला कवि सिद्ध किया है। इस आधार पर उनकी प्रतिनिधि रचना असाध्यवीणा में अज्ञेय की अनुभूति में जेन बौद्धमत तथा अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की समीक्षा किया जाना उचित होगा।

जेन बौद्ध मत का जहाँ तक प्रश्न है अज्ञेय ने स्वयं इसका अपने ऊपर प्रभाव स्वीकार किया है। असाध्यवीणा में भी यह प्रभाव विभिन्न स्तरों पर मिलता है। सर्वप्रथम कथा के चुनाव में, जो जापानी मिथक पर आधारित है, यह प्रभाव दिखता है। जापान में जेन बौद्धमत का प्रभाव अधिक है। दूसरे स्तर पर अज्ञेय ने पीवों एवं प्रियंवद की साधना पद्धति की जो व्याख्या की है वह भी जेन बौद्ध मत से प्रभावित है।

प्रियंवद की एकान्त साधनापद्धति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'छला गया था केशकम्बली राजसभा को' के माध्यम से व्याख्यायित की गयी है। यही साधना प्रक्रिया ज़ेन बौद्धमत में स्वीकार की गयी है।

ज़ेन बौद्धमत में जगत को वास्तविक माना गया है। यह प्रभाव असाध्यवीणा में सृजन के माध्यम से सिद्ध होता है। अज्ञेय विशाल किरीट वृक्ष के माध्यम से जगत को वास्तविक सिद्ध करते हैं।

ब्रह्म के स्वरूप के आधार पर भी असाध्यवीणा ने जेन बौद्ध मत का प्रभाव दिखता है। ब्रह्म को अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित और अप्रमेय कहकर व्याख्यायित किया गया है। यही विचार जेन बौद्धमत में भी है।

दूसरा प्रश्न अस्तित्ववाद का है। अज्ञेय के रचना संसार में अस्तित्ववादी भावबोध स्पष्टतः दिखायी पड़ता है। असाध्यवीणा द्वारा मिथकीय ढांचे की रचना है जो प्राचीन परम्परा से सम्बद्ध है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

किन्तु फिर भी, अज्ञेय ने अपने रचना कौशल के माध्यम से अस्तित्ववादी दृष्टि इसमें पिरो दिया है।

अज्ञेय ने अपने युग सत्य की पहचान सृजनशीलता के अभाव के रूप मे की है। अति वैज्ञानिक, अति भौतिकता के इस युग में मनुष्य अपने 'स्व' से कटकर सृजन को भूल गया है। वह मिथ्या ज्ञान, गुण व दर्प से मुक्त होकर अपनी सर्जनात्मकता को विस्मृत हो चुका है। यही भाव असाध्यवीणा मे है। राजा की प्रमुख समस्या है कि 'कोई ज्ञानी, गुणी न काम आ सका'। वीणा का न बज पाना आधुनिक युग मे सृजनशीलता के अभाव की ही समस्या है। अज्ञेय ने इस समस्या का कारण 'दर्प' को माना है।

अज्ञेय मात्र समस्या उठाते ही नहीं है बल्कि समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। वह व्यक्ति को उसके 'स्वधर्म' से जोड़कर अस्तित्ववादी निरर्थकता बोध से बचने का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपाय सुझाते है यही असाध्यवीणा में इस प्रकार व्यक्त हुआ है:
"उठ गयी सभा/सब अपने-अपने काम लगे/युग पलट गया।"

अतः स्पष्ट है कि अज्ञेय ने मानवता को स्वधर्म से जोड़कर अस्तित्ववादी निरर्थकता बोध से बचने का उपाय बताते है यही पर अज्ञेय सार्त्र से अलग नजर आते है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रयोग अज्ञेय अपने युग सत्य को पहचानने में तो करते है किन्तु अपनी गहरी दृष्टि के माध्यम से वे मौलिक समाधान भी प्रस्तुत करते है।

6 12/20

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'राम की शक्तिपूजा' में विभिन्न स्तरों पर समायोजित द्वंद्वात्मकता की पहचान कीजिये। 15

द्वन्द्व जीवन की कठोर सच्चाई है। यह व्यक्ति की सामाजिकता का प्रमाण भी है। यदि कविता इस द्वन्द्व को पकड़ सके और अभिव्यक्त कर सके तो निस्संदेह वह कालजयी होगी। इस दृष्टि से 'राम की शक्तिपूजा' के माध्यम से निराला की चेतना और काव्यकला का परीक्षण किया जा सकता है।

सर्वप्रथम निराला ने इस कविता के माध्यम से अपना आत्मसंघर्ष व्यंजित किया है। 'रवि हुआ अस्त' निराला के जीवन में छा रहे अंधकार का प्रतीक है। पहले पत्नी और फिर एकमात्र पुत्री सरोज की मृत्यु के कारण 'सरोज स्मृति' के निराला टूटे, थके, हारे नजर आते हैं किन्तु निराशा यहीं तक नहीं रुकती। अमानिशा के घनघोर अन्धकार तक जाती है। यहीं आशा के रूप में राम एक क्षीण प्रकाश के रूप में आते हैं। यह निराला की आत्मसंघर्ष की चेतना है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविता में द्वन्द्व का दूसरा स्तर न्याय व अन्याय का द्वन्द्व है 'रावण अधर्म होकर भी यदि कर सका त्रस्त' इस कविता की मूल समस्या है 'अन्याय जिधर हैं उधर शक्ति' इस द्वन्द्व का प्रमुख कारण है। यहीं पर जाम्बवंत 'शक्ति की मौलिक कल्पना' कर न्याय अन्याय के द्वन्द्व में न्याय की विजय का मार्ग प्रशस्त करते है।

तीसरे स्तर पर द्वन्द्व निराला अपने युग के स्वाधीनता आन्दोलन के रूप में पहचानते है राम गांधी के प्रतीक के रूप में स्वाधीनता आन्दोलन में ब्रिटिश अन्यायपूर्ण शासन से जूझते है।

एक अन्य स्तर पर द्वन्द्व प्रकाश और अंधकार का है 'रवि हुआ अस्त' के पश्चात राम 'जलती मशाल' के रूप में उपस्थित है।

अतः स्पष्ट है कि राम की शक्तिपूजा द्वन्द्वों की ही अभिव्यक्ति है। निराला की गहरी जीवन व काव्यदृष्टि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस संवेदनशीलता का सृजन भी करती है और उसे अभिव्यक्ति भी प्रदान करती है।

9/14

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पद्मावत अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

अन्योक्ति एवं समासोक्ति दो काव्य युक्तियाँ है। पद्मावत के संदर्भ में यह प्रश्न विभिन्न विद्वानों ने उठाया है और विजय देव नारायण साही ने इसका व्यापक विश्लेषण किया है।

अन्योक्ति के रूप मे पद्मावत को मानने के पीछे जायसी का सूफी परम्परा से संबद्ध होना माना गया है। इसके समर्थकों ने माना है कि जायसी ने रत्नसेन पद्मावती और नागमती के कथा ढाँचे का प्रयोग अपने सूफी विचारों को सरल माध्यम के रूप मे किया है। रत्नसेन को बंदा मानते हुए पद्मावती को खुदा माना गया है और अलाउद्दीन को शैतान। इसी ढाँचे में तरीकत, मारिफत, हकीकत की व्याख्या की गयी है और इश्क हकीकी की प्रक्रिया बताया गया है।

किन्तु इस व्याख्या मे नागमती के चरित्र की न तो व्याख्या हो पाती है नही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जायसी के उसके वर्णन की मार्मिक दृष्टि को न्याय मिल जाता है।

समासोक्ति का ढाँचा पद्मावत को रत्नसेन नागमती की कथा के साथ सूफी सिद्धान्तों की स्थापना के दृष्टिकोण से स्वीकार करता है। इस दृष्टि से कथा का ढाँचा भी पूर्ण होता है साथ ही प्रेमाख्यान के साथ सूफी दृष्टि पर भी न्यायपूर्ण आलोचना का मानक पूर्ण होता है। शाही ने इस दृष्टिकोण को भी पूर्णतः स्वीकार नहीं किया है। फिर भी, यदि मानना ही हो तो समासोक्ति का ढाँचा अन्योक्ति की अपेक्षा अधिक स्वीकार्य है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भ्रमरगीतसार में सूर के विरह वर्णन के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए उससे अपनी तार्किक सहमति या असहमति प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल हिन्दी आलोचना के केन्द्रीय व्यक्तित्व हैं। समूची आलोचना उनके द्वारा की गयी स्थापना के खण्डन-मण्डन पर ही आधारित है। भ्रमरगीत सार में सूर की गोपियों का विर्णन भी इसका अपवाद नहीं।

भ्रमरगीत में सूर की गोपियों के विरह के कारण की सर्वप्रथम विवेचना की गयी है। आचार्य शुक्ल ने उनके विरह की तुलना तुलसी की सीता और जायसी के नागमती से की है। आचार्य शुक्ल ने विरह के कारण को उस स्तर का औदात्यपूर्ण नहीं माना है जो सीता और नागमती का है। वे कहते हैं कि कृष्ण का नदी के उस पार चले जाना विरह के उस ताप को नही उत्पन्न कर सकता जो समुद्र पार सीता और नागमती को तप्त करता है। इसके अतिरिक्त सूर के उस प्रसंग की भी आलोचना शुक्ल जी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

करते हैं जो कृष्ण के वृक्षों के पीछे छिप जाने से गोपियों के मूर्छित होने पर रचा गया है।

वस्तुतः शुक्ल जी की ये मान्यताएं उनकी लोकमंगलवादी दृष्टि के आधार पर निर्मित है। वे 'मर्यादा' के आधार पर आलोचना के सिद्धान्त निर्मित करते हैं और व्यावहारिक आलोचना में भी यही परिलक्षित होता है।

यदि शुक्ल जी के इन स्थापनों पर विचार किया जाए तो कहा जा सकता है कि विरह का दंश भौगोलिक दूरी नहीं तय करता है वरन वह असुरक्षा, जो प्रेमी के कहीं अन्य चले जाने से उत्पन्न होती है, तय करती है। सूर की गोपियों का विरह कृष्ण के जमुना पार चले जाने से जितना है उतना ही उनके कुब्जा से नजदीकी के संदेह से भी है।

इस आधार पर शुक्ल जी के मत से कुछ असहमति व्यक्त की जा सकती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गोपियों के विरह की अभिव्यक्ति को लेकर भी शुक्ल जीने मौलिक स्थापनाएं की है। वे कहते हैं कि 'हृदय की भाव-प्रेरित वक्रता के कारण सूर की गोपियों की प्रेम प्रसूत मन्तवृत्तियों के कारण यह विरह वर्णन अपनी अभिव्यक्ति शैली के कारण अद्वितीय बन पड़ा है।'

इस मत का मुख्य कारण शुक्ल जी का अभिव्यंजनावाद का विरोध है। शुक्ल जी ने 'कविता क्या है' में इस पर व्यापक हस्तक्षेप किया है। इस स्थापना को मानने में कोई दुविधा नहीं होती।

अतः हम कह सकते है कि विरह के कारण को लेकर की गयी व्याख्या में शुक्ल जी से कुछ असहमतियाँ हो सकती है किन्तु अभिव्यक्ति शैली के संबंध में की गयी स्थापना पूर्णतः स्वीकार्य है।

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) "'असाध्य वीणा' कविता मार्क्सवादी रचना-दृष्टि को खंडित करने का रचनात्मक उपक्रम है।" विवेचन कीजिए। 15

असाध्यवीणा प्रयोगवादी कवि अज्ञेय की प्रतिनिधि रचना है। प्रयोगवाद का युग मार्क्सवादी प्रगतिशील युग प्रगतिवाद के बाद आता है। स्वाभाविक सा प्रश्न उठता है कि अज्ञेय ने प्रगतिवाद की रचना दृष्टि को खण्डित करने का प्रयास किया है या उसमे विपर्यय मात्र है?

संवेदना के स्तर पर हम देखे तो प्रगतिवाद कविता के माध्यम से उन सभी संरचनाओं को तोड़ने का प्रयास करता है जो व्यक्ति को व्यक्ति के द्वारा शोषण का माध्यम बनाती है। अज्ञेय ने इस दृष्टि को स्वीकार नही किया है। कविता को अज्ञेय आत्माभिव्यक्ति का माध्यम बनाते है। उन पर फ्रॉयड और युंग का प्रभाव है। वे भावनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति को कविता का उद्देश्य घोषित करते हुए कहते है - "सुनो कवि भावनाएं नही है सोता / भावनाए खाद है केवल।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किन्तु ऐसा नहीं कि अज्ञेय शोषणकारी व्यवस्था का समर्थन करते हैं। वे कहते हैं- "दुख सबको माजता है/ किन्तु जिसको माजता है/सीख देता है उन्हें कि/ दूसरों को मुक्त रखें।"

इस प्रकार भावों के स्तर पर वे शोषणकारी अवस्था का विरोध करते हुए भी मार्क्सवादी दावों को स्वीकार नहीं करते हैं।

अभिव्यक्ति शैली के आधार पर अज्ञेय मार्क्सवाद की सीधी-सपाट शैली का विरोध करते हैं। वे भाषा को भी सत्य मानते हैं और प्रयोग को साधन मानते हुये कहते हैं- 'प्रयोग का कोई साध्य नहीं होता वह साधन है और दोहरा साधन है।' वे भाषा को भी महत्व देते हैं। असाध्यवीणा में भाषा की प्रतीकात्मकता, अलंकारिता एवं बिंबात्मकता इसका उदाहरण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अत: हम कह सकते हैं कि असाहयवीणा संवेदना एवं शिल्प दोनों स्तर पर मार्क्सवाद की सीधी-सपाट रचना होने को पार पाने का प्रयास है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नागार्जुन की कवि दृष्टि अत्यंत व्यापक है। उसमें 'रिक्शेवाले की फटी बिवाइयाँ' हैं, तो 'पके हुये भुट्टों की महक' भी है, इसके साथ ही स्त्री के स्पर्श- परस से उत्पन्न होने वाली अनिर्वचनीय अनुभूतियाँ भी हैं।

सर्वप्रथम नागार्जुन की दृष्टि उस मनुष्य पर पड़ती है जो धरती का निवासी है न कि स्वर्ग में विचरण करने वाले सरीखे उच्च अभिजात वर्ग पर। वे रिक्शे वालों की फटी बिवाइयों को देखकर पीड़ित होते हैं तो पसीने से तर-बतर मजदूर के दाहक पसीने के 'गुण-धर्म' की खोज करते हैं। नागार्जुन इस मेहनतकश वर्ग की पीड़ा से पीड़ित होते हैं। उसके शोषण की हर व्यवस्था को खण्डित कर देना चाहते हैं।

नागार्जुन के राजनीतिक व्यंग्य जनजीवन की प्रतिबद्धता से ही उत्पन्न हुए हैं। वे कहते हैं लौटे हैं दिल्ली से कल टिकटमार, के। तो उड़ लोकतन्त्र की मखौल ही उड़ाते हैं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जो स्वाधीनता आंदोलन का सपना था। बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित मानवता और राजनीतिक संवेदनहीनता पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं

'हरिजन गिरिजन भूखो मरते / हम डूमे वन वन में / तुम रेशम की साड़ी डाँटे उड़ती फिरो गगन में।''

धरती के पुजारी होने का तात्पर्य प्रकृति के उस रूप को भी देखने से है जो अभी तक 'मदेस' मनकर कविता की भूमि नहीं बन पाया था। वे बके मुहरे को देखकर हुलस जाते हैं तो हिमालय के सौंदर्य पर भी अभिभूत होते हैं। जमुना किनारे लेटी सूअर को 'मादरे हिन्द की बेटी' घोषित करना नागार्जुन की प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को उजागर करता है।

प्रेम के पुजारी होने का प्रमाण नागार्जुन की कविता 'वह तुम थी' और 'तन गमी शैद' हैं जो स्त्री के साहचर्य एवं स्पर्श से होने वाली अनुभूतियों की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कविता है 'खुरदरी चूड़ियाँ' एक बस ड्राइवर की अपनी बच्ची के प्रति वात्सल्य को चित्रित करती है।

अतः स्पष्ट है कि नागार्जुन की विपुल काव्यभूमि में जनजीवन, प्रकृति और प्रेम चतुर्दिक फैले हुए हैं। यूं भी स्वयं नागार्जुन स्वयं को जनकवि घोषित किए हुये हैं—

'जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊं
जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सामाजिक यथार्थवादी रचनाकार प्रेमचंद के कालजयी उपन्यास गोदान से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या : इन पंक्तियों में प्रेमचंद होरी की अनुभूतियों को व्यक्त कर रहे हैं। वे कहते हैं कि होरी अतीव जीजिविषा का व्यक्ति है वह हार मानने वाला व्यक्ति नहीं है। हीरा की घर वापसी तथा उसका क्षमा माँगना तथा गोबर का घर आ जाना उसकी जीवन की उपलब्धियाँ है। अपनो से हार जाना ही उसकी विजय है, उसके जीवन की छोटी-छोटी असफलताओं की कहानियाँ उसके सफल जीवन के उदाहरण है।

संरचनागत सौंदर्य : 1. साधारण कृषक की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समूची जीवन गाथा इन पंक्तियों मे देखी जा सकती है।

2. सामाजिकता व्यक्ति के जीवन को सफल बनाती है। अपनों से हार जाना व्यक्ति को एक तरह का संतोष ही देता है।

3. प्रेमचंद की किस्सागो शैली अत्यंत रोचक है।

4. प्रेमचंद की भाषा भावानुकूल है।

5. वाक्य गठन अत्यंत चुस्त है।

7. तत्समी भाषा है। 'उल्लास गर्व' पुलक भव

6/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ आंचलिक उपन्यासों की धारा के प्रणेता फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों 'रेणु' जी ने ग्रामीण जीवन के यथार्थ को चित्रित कर रहे हैं। वे कहते है कि ग्रामीण जीवन, जो कि दमितों, शोषितों एवं वंचितों से निर्मित होता है, उनमें भी एक रस है उल्लास है। ग्रामीण जीवन के संगीत को विद्यापति के गान के माध्यम से व्यंजित किया गया है।

टिप्पणी: अन्तरपाठ्यता का उदाहरण दृष्टिगोचर है। दिनकर की कविता का उल्लेख उपन्यास में किया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2- यह रेणु की आँचलिक कृति है जो इस आँचलिकता के भीतर से भी भारत के ग्रामीण जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त कर सकी है।

3- भाषा भावानुकूल होने के साथ पात्रानुकूल भी। डा॰ प्रशान्त पढ़ा लिखा चरित्र है जो ऐसमी भाषा का प्रतिनिधित्व करता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककार जयशंकर प्रसाद की कृति स्कंदगुप्त से ली गयी है।

प्रसंग व आशय: इन पंक्तियों में देवसेना विजया से युद्ध के महत्व को व्याख्यायित कर रही है। वह कहती है कि युद्ध भी गान की भाँति ही सृजनशीलता धारण करता है। युद्ध में प्रयुक्त विभिन्न शस्त्रों की टकराहट से जो ध्वनि उत्पन्न होती है वह संगीतमय होती है। प्रकृति का गुण है सृजन व संहार। संहार से ही सृजन की उत्पत्ति होती है और युद्ध उसी संहार का प्रतीक होता है जो सुखमय भविष्य के सृजन का संकेत देता है।

टिप्पणी:

1. इन पंक्तियों में प्रसाद का युद्ध दर्शन व्यक्त हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2- युद्ध के संबंध में दिनकर के विचार भी कुछ यूँ ही हैं जो अन्याय से लड़ने के लिए युद्ध को आवश्यक मानते हैं।

3- हीगल जैसे दार्शनिक भी राज्य एवं अधिकारों के अस्तित्व के लिए युद्ध को काम्य मानते हैं

4- प्रसाद की भाषा तत्सम प्रकार की है।

5- प्रसाद के नारी चरित्र अत्यंत विलक्षण हैं ध्रुवस्वामिनी, ममता इत्यादि उनकी प्रतिनिधि नायिकाएं हैं।

6- संवाद अत्यंत गठे हुए हैं पात्रानुकूल भी हैं

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

सन्दर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककार मोहन राकेश की कृति आषाढ़ का एक दिन से ली गयी है।

प्रसंग एवं व्याख्या: इन पंक्तियों में प्रियंगुमंजरी मल्लिका को राजनीति एवं साहित्य की प्रकृति के अंतरों को समझा रही है। वह कहती है कि राजनीति और साहित्य मे प्रवृत्तिगत अन्तर है। राजनीति प्रत्येक क्षण चौकन्ना रहने की कला है। एक क्षण की भी चूक बड़े अनिष्ट को जन्म दे सकती है।

वस्तुत: राकेश इन पंक्तियों के माध्यम से व्यंग्य कर रहे है जो राजनीति के क्षण-प्रतिक्षण कुटिल चालबाजियों पर है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

टिप्पणी: इन पंक्तियों के माध्यम से प्रियंवदा मंजरी को अभिजात्य चेतना को उभारा गया है।

2. राकेश की भाषा अत्यंत सर्जनात्मक है। व्यंग्य की भाषा होने के बावजूद अत्यंत सधा प्रयोग है।

3. भाषा तत्सम है।

4. संवादोचित भाषा है।

6

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

सौंदर्य दृष्टि [illegible]

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ नई कहानियों के संकलन एक दुनिया समानान्तर में संकलित कहानी 'मेरा दुश्मन' की है जिसके रचनाकार कृष्ण बलदेव वैद्य है।

प्रसंग व व्याख्या: इन पंक्तियों में कहानीकार शहरी जीवन के बनावटीपन के बीच अजनबीपन तथा अकेलेपन को झेल रहे मनुष्य की मानसिक स्थितियों को व्यक्त किया गया है। कहानीकार कहता है कि बच्चे जो अभी उस दर्प कपट से मुक्त नही हैं उनमें भोलापन है किन्तु बड़े लोगो में शहरी जीवन का बनावटी पन आ गया है उनमें आत्माभिमान और ललकार है जो व्यक्ति को उसके स्व से दूर करती जा रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

टिप्पणी :

1. आधुनिक भावबोध परिलक्षित होता है।
2. व्यंग्य शैली का उदाहरण है।
3. अस्तित्ववादी जीवन दृष्टि दिखायी पड़ती है।
4. भाषा भावानुकूल है।
5. चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है।

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

हिन्दी रंग मंच के विकास में मोहन राकेश का योगदान आरंभिक होने के साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण भी है। आषाढ़ का एक दिन के प्राक्कथन में वे जिस किसी 'विशेष परंपरा से अनुस्यूत नहीं' वाले रंग मंच की आकांक्षा कर रहे थे वह उनकी ही रचना प्रक्रिया में घुला हुआ है।

सर्वप्रथम राकेश की रंगमंच संबंधी दृष्टि का परीक्षण किया जाना उचित होगा। वे चाहते थे कि हिन्दी रंग मंच हिन्दी जनता की सांस्कृतिक आकांक्षाओं की पूर्ति करे।

विस्तार करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation